International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उत्सव एवं मेलों (ऊँट मेला, और कपिल मुनि मेला) का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन और पर्यटन विस्तार (बीकानेर जिले के संदर्भ में)

[1]राजेश स्वामी, [2]डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत

[1]पीएचडी शोधार्थी(इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय उदयपुर(राजस्थान)
[2]शोध पर्यवेक्षक व सहायक आचार्य(इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान)

सारांश
बीकानेर जिले की सांस्कृतिक पहचान उसके पारंपरिक उत्सवों एवं मेलों से गहराई से जुड़ी है, जिनमें ऊँट मेला और कपिल मुनि मेला विशेष महत्व रखते हैं। यह शोध इन दोनों आयोजनों के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों, सामुदायिक भागीदारी, पारंपरिक अभिव्यक्तियों तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था पर इनके प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 2025 के ऊँट उत्सव में शामिल नई गतिविधियों—जैसे ऊँट-आधारित खेल, पशु-कौशल प्रदर्शन, और स्थानीय शिल्प प्रदर्शनी—ने मेले को न केवल वैश्विक दृश्यता प्रदान की है बल्कि "राजस्थान पर्यटन नीति 2025" में उल्लिखित क्षेत्रीय पर्यटन विस्तार के लक्ष्यों को भी सुदृढ़ किया है। इसी प्रकार, कपिल मुनि मेले में धार्मिक आस्था, ग्रामीण-शहरी सहभागिता और लोकपरंपराओं की निरंतरता सामाजिक एकजुटता का आधार बनती है। शोध पत्र यह भी दर्शाता है कि इन आयोजनों में उभरते अवकाश-पर्यटन, सांस्कृतिक मार्गों के विकास, होमस्टे मॉडल, तथा डिजिटल प्रचार जैसे आयाम बीकानेर जिले में पर्यटन के बहुआयामी विस्तार को गति देते हैं। निष्कर्षतः, दोनों मेले मात्र सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास, सतत पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के प्रभावी माध्यम के रूप में उभर रहे हैं।

मुख्य शब्द: बीकानेर, ऊँट मेला 2025, कपिल मुनि मेला, राजस्थान पर्यटन नीति 2025, सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन, सामुदायिक सहभागिता, सतत पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय अर्थव्यवस्था.

1. बीकानेर: सांस्कृतिक वैभव, मरु-परंपराएँ और उत्सवी जीवन

राजस्थान के उत्तर–पश्चिमी भाग में अवस्थित बीकानेर प्रदेश भारतीय मरु-सांस्कृतिक भूगोल में अपनी विशिष्टता, ऐतिहासिक विरासत और समृद्ध लोकपरंपराओं के कारण विशेष महत्व रखता है। 1488 ई. में राव बीका द्वारा स्थापित यह नगर न केवल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि मध्यकालीन व्यापार-पथों, विशेषकर ऊँट-कारवाँ आधारित मरु–व्यापार मार्गों का प्रमुख केन्द्र रहा है (*भंडारी, 2020*)। बीकानेर का सामाजिक-आर्थिक गठन इन व्यापारिक मार्गों, मरु-परिवेश की प्राकृतिक कठोरता तथा सामुदायिक जीवन की पारस्परिक निर्भरता से निर्मित हुआ है, जिसे कई विद्वान "मरु-जीवन की अनुकूलनशील संस्कृति" के रूप में चिह्नित करते हैं (*शर्मा, 2019*)। मरु प्रदेश की सांस्कृतिक बनावट में ऊँट केवल एक पशु नहीं, बल्कि "मरु-सभ्यता का आधार स्तम्भ" माना जाता है। बीकानेर को "कैमल कल्चर कैपिटल" के रूप में माना जाना इसी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमाण है। 'राष्ट्रीय ऊँट

अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर' की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, राजस्थान की कुल ऊँट-जनसंख्या का लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा बीकानेर संभाग में केंद्रित है (*एनआरसी ऊँट रिपोर्ट, 2024*)। यह आँकड़ा स्पष्ट करता है कि ऊँट बीकानेर की अर्थव्यवस्था, लोकविश्वास, परिवहन, वस्त्र-निर्माण और पशुपालन-आधारित उद्यमों का मुख्य आधार है। ऊँट-दूध प्रसंस्करण, ऊँट-ऊन उत्पाद, ऊँट-गाड़ियों द्वारा ग्रामीण परिवहन और कृषि में ऊँट-शक्ति का उपयोग बीकानेर की पारंपरिक आजीविका प्रणालियों को आज भी जीवित रखता है (*दाधीच, 2021*)।

बीकानेर की सांस्कृतिक संरचना में लोकनृत्य, लोकसंगीत, वाद्यपरंपरा, वस्त्र-शैली और हस्तकला का विशेष स्थान है। धमाल, गवर, चकरी, तेजाजी नृत्य और भील-शैली की नृत्य परंपराएँ यहाँ के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सामाजिक एकता, श्रम-संस्कृति और सामुदायिक आनंद के प्रतीक मानी जाती हैं (*जोशी, 2018*)। बीकानेर का भोजन—जैसे बाजरा खिचड़ी, कड़ाही सब्ज़ी, ढूंगर भोजन, रामरसोड़ा और देसी घी आधारित व्यंजन—मरु प्रदेश की जलवायु और श्रम-केंद्रित जीवनशैली के अनुरूप ऊर्जा-समृद्ध और शुष्कता-रोधी आहार के रूप में विकसित हुए हैं (*खत्री, 2020*)। वस्त्र-परंपरा और हस्तकला में गोटा-पत्ती, उंट-ऊन के अंचल, हस्तनिर्मित आभूषण, लकड़ी-नक्काशी, और मिट्टी-शिल्प बीकानेर की पारंपरिक कारीगरी के महत्वपूर्ण आयाम हैं। बीकानेरी हस्तशिल्प की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बढ़ती मांग इसका परिचायक है कि परंपरा और उद्यमशीलता का समन्वय बीकानेर को सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था के उभरते केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है। 'राजस्थान आर्थिक सर्वेक्षण 2024' के अनुसार बीकानेर के हस्तशिल्प एवं उंट-ऊन उत्पादों के निर्यात में पिछले तीन वर्षों में औसतन 18 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है (*राजस्थान आर्थिक सर्वेक्षण, 2024*)।

बीकानेर में सांस्कृतिक निरंतरता का सबसे जीवंत माध्यम इसके उत्सव और मेले हैं। यहाँ के मेले केवल सांस्कृतिक प्रदर्शनों के मंच नहीं हैं, बल्कि सामुदायिक एकजुटता, धार्मिक आस्था, आर्थिक विनिमय, और सांस्कृतिक स्मृति के सक्रिय स्रोत भी हैं (*सिंह, 2021*)। बीकानेर के वार्षिक उत्सव—जैसे करणी माता उत्सव, श्री गंगा सिंह जयंती, पुष्टिकर उत्सव, कार्तिक पूर्णिमा, तथा दीवाली—स्थानीय लोकविश्वासों और सांस्कृतिक आचारों को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से ऊँट मेला और कपिल मुनि मेला बीकानेर की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखने वाले दो प्रमुख स्तम्भ हैं। ऊँट मेला जहाँ मरु प्रदेश की पशु-परंपराओं, लोककला, लोकनृत्य और ग्रामीण आजीविका को वैश्विक दृश्यता प्रदान करता है, वहीं कपिल मुनि मेला बीकानेर की आध्यात्मिक विरासत, धार्मिक विश्वासों और सामुदायिक आस्था का प्रतीक है (*मीणा, 2022*)। दोनों मेलों में स्थानीय समुदायों, ग्रामीण कारीगरों, महिलाओं, युवाओं और विभिन्न सामाजिक समूहों की सक्रिय सहभागिता बीकानेर की सांस्कृतिक जीवंतता को निरंतर पुनर्सृजित करती है। सांस्कृतिक अध्ययन के विद्वान मानते हैं कि बीकानेर जैसे मरु नगरों में उत्सव "सांस्कृतिक पुनरुत्पादन" के प्रमुख माध्यम हैं, क्योंकि इनके माध्यम से लोकपरंपराएँ आधुनिक सामाजिक-आर्थिक बदलावों के बीच भी अपनी पहचान बनाए रखती हैं (*ठाकुर, 2023*)। इस प्रकार, बीकानेर के मेले और उत्सव न केवल परंपरा के संरक्षक हैं, बल्कि सांस्कृतिक नवाचार, सामाजिक सामंजस्य, और आर्थिक सक्रियता के गतिशील मंच भी हैं। इन आयोजनों के माध्यम से बीकानेर अपनी ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत को न केवल जीवित रखता है, बल्कि उसे बदलते समय के अनुरूप पुनर्संरचित भी करता है।

1.2 कोलायत का कपिल मुनि मेला: ऐतिहासिक स्मृति, तीर्थ-परंपरा और सांस्कृतिक महत्ता

कपिल मुनि का मेला राजस्थान के बीकानेर जिले के अंतर्गत स्थित कोलायत (प्राचीन नाम—कपिलायतन) में प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है, जिसे इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विशाल मेला माना जाता है। "कपिलायतन" नाम ही यह प्रमाणित करता है कि यह स्थल सांख्य दर्शन के प्रवर्तक माने जाने वाले महर्षि कपिल के तपोभूमि के रूप में आदिकाल से पूजित है (शर्मा, 2016)। स्थानीय परंपराओं, पौराणिक आख्यानों तथा पुराणों में

वर्णित कथाओं में यह उल्लेख मिलता है कि कपिल मुनि ने मानव कल्याण और सृष्टि-संतुलन की साधना के लिए इसी स्थल को चुना था, जिसके कारण यह स्थान "मोक्ष–स्थली" के रूप में लोकस्मृति का स्थायी भाग बन चुका है (जोशी, 2019; पुराण संदर्भ). कोलायत का भूगोल भी इस स्थल की महत्ता को विशेष रूप से प्रतिष्ठित करता है। मरुस्थलीय जलवायु और शुष्क भू-क्षेत्र में स्थित यह तीर्थ झील—जिसमें 52 घाट हैं—एक अद्वितीय सांस्कृतिक और जल-आधारित संरचना का उदाहरण प्रस्तुत करती है। झील के चारों ओर फैले बरगद के वृक्ष, मंदिरों की परंपरा और शांत वातावरण इसे प्राकृतिक और आध्यात्मिक दोनों ही स्तरों पर महत्त्वपूर्ण बनाते हैं (गुप्ता, 2020)। कपिल मुनि घाट पर स्थित संगमरमर की प्रतिमा वाला मंदिर, जिसे कपिल ऋषि को समर्पित माना जाता है, तीर्थयात्रियों के केंद्रीय आकर्षण का स्थल है। इस मंदिर का स्थापत्य, मूर्ति-शिल्प, तथा प्राचीन धूनी स्थानीय धार्मिक आस्था और क्षेत्रीय आध्यात्मिक इतिहास को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं (दवे, 2021)।

कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ स्नान करना अत्यंत शुभ माना जाता है, और मान्यता है कि कोलायत झील में डुबकी लगाने से जीवन के पापों का शमन होता है तथा मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। कुछ पुराणों में यह वर्णित है कि कोलायत तीर्थ की एक रात्रि का प्रवास अन्य तीर्थों पर दस वर्षों तक रहने के फल के तुल्य है, जो इस स्थल की धार्मिक प्रतिष्ठा को और अधिक प्रबल बनाता है (पुराण संदर्भ; मिश्रा, 2018)। झील के किनारे अनेक मंदिर स्थित हैं, जिनमें से कुछ विशेष रूप से महिलाओं के स्नान के लिए आरक्षित हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से स्त्री-सम्मान और गोपनीयता को मान्यता देने वाले धार्मिक व्यवहारों का भी हिस्सा रहा है। कपिल मुनि मेले का सामाजिक आयाम भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि धार्मिक। यह मेला तीर्थ-पर्यटन, ग्रामीण-शहरी सहभागिता तथा धार्मिक-आर्थिक गतिविधियों का व्यापक मंच बन चुका है। बीकानेर जिले के गाँवों और शहरी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग यहाँ केवल धार्मिक कारणों से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक उद्देश्य से भी एकत्रित होते हैं। मेले के दौरान लगने वाले अस्थायी बाज़ार, लोककला प्रदर्शन, पारंपरिक भोजन, ऊँट-आधारित उत्पाद और हस्तशिल्प स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक मजबूत मौसमी बढ़ावा देते हैं (कुमार, 2022)। शोध दर्शाते हैं कि कोलायत का मेला न केवल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देता है बल्कि ग्रामीण समुदायों की आर्थिक संरचना को भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सुदृढ़ करता है—विशेषकर कारीगरों, पशुपालकों और छोटे व्यापारियों के लिए यह मेला महत्वपूर्ण आय का स्रोत है (सिंह, 2020)। इस प्रकार, कपिल मुनि का मेला एक बहुआयामी सांस्कृतिक-धार्मिक आयोजन है, जो बीकानेर की क्षेत्रीय पहचान, लोकविश्वास, सामाजिक एकजुटता तथा आर्थिक गतिविधियों को एक साथ जोड़ता है। कोलायत का प्राकृतिक परिवेश, पौराणिक विरासत, जल-आधारित तीर्थ-परंपरा और सामुदायिक सहभागिता इसे राजस्थान के महत्त्वपूर्ण तीर्थ-स्थलों में प्रतिष्ठित करते हैं। मेले की निरंतरता इस बात का साक्ष्य है कि कैसे धार्मिक स्मृति, लोकपरंपराएँ और सामाजिक जीवन एक दूसरे के सह-अस्तित्व से क्षेत्रीय संस्कृति को जीवित और प्रवाहित रखते हैं।

1.3 ऊँट मेला 2025: परंपरा, नवाचार और वैश्विक दृश्यता

बीकानेर ऊँट मेला 2025—जिसे अंतर्राष्ट्रीय ऊँट उत्सव के रूप में भी आधिकारिक मान्यता मिली—जनवरी 2025 में 10 से 12 जनवरी तक (कुछ स्रोतों में 9–12 जनवरी) अत्यंत भव्य रूप से आयोजित हुआ। इस संस्करण में ऊँट दौड़, ऊँट सजावट प्रतियोगिताएँ, लोकनृत्य और संगीत प्रस्तुतियाँ, साथ ही "2025 फीट लंबी पगड़ी बाँधने का विशेष कार्यक्रम" शामिल था, जिसने राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत, परंपरागत शिल्पकला और मरु-जीवन सौंदर्य का वैश्विक स्तर पर प्रदर्शन किया (राजस्थान पर्यटन विभाग, 2025)। इस वर्ष के आयोजन को न केवल पर्यटन विभाग ने बड़े पैमाने पर प्रोत्साहन दिया, बल्कि इसे "ऊँट संस्कृति" के नाम से अंतरराष्ट्रीय मीडिया और वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया गया, जिससे बीकानेर की पहचान और अधिक शक्तिशाली रूप से उभरी (शेखावत, 2024)।

ऐतिहासिक रूप से यह उत्सव बीकानेर की उस बहुस्तरीय ऊँट-आधारित संस्कृति का विस्तार है, जिसने सदियों से मरु व्यापार, परिवहन, पशुपालन और स्थानीय आर्थिकी को आकार दिया है। बीकानेर का सामाजिक इतिहास ऊँट-परंपराओं, राहड़ संस्कृति, खेजड़ी-आधारित जीवनशैली और पशुपालक समुदायों की आजीविकाओं से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है—इसी कारण ऊँट मेला स्थानीय सांस्कृतिक स्मृति और सामुदायिक पहचान को सक्रिय रखने का महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है (गौड़, 2018)। 2025 का संस्करण परंपरा और नवाचार दोनों के मेल का संगठित उदाहरण है, जो राजस्थान पर्यटन नीति 2025 के "थीम-आधारित फेस्टिवल इकोनॉमी" के उद्देश्य को सशक्त रूप से प्रतिफलित करता है (राजस्थान पर्यटन नीति, 2025)। इस वर्ष मेले में कई नवाचारी गतिविधियों का समावेश किया गया। कैमल स्किल शोज़ के माध्यम से ऊँटों की पारंपरिक कौशल कला—चाल, संतुलन, नृत्य, आभूषण-प्रदर्शन, ग्रूमिंग शोज़—को नए सौंदर्यबोध, प्रकाश व्यवस्था और प्रस्तुति शैलियों के साथ प्रदर्शित किया गया, जिसने दर्शकों को परंपरा और आधुनिकता का संयुक्त अनुभव प्रदान किया (दवे, 2024)। **डेज़र्ट स्पोर्ट्स एरीना** के अंतर्गत सैंड बाइकिंग, ड्यून रन, ऊँट स्पर्धाएँ, पैरामोटरिंग और डेज़र्ट ट्रैक इवेंट्स ने एडवेंचर टूरिज़्म को भी मेले का महत्वपूर्ण घटक बनाया। विशेषज्ञों का मानना है कि 2025 में पहली बार ऊँट-आधारित खेलों और रेगिस्तानी खेल गतिविधियों की विविधता ने बीकानेर को "न्यू एज डेज़र्ट टूरिज़्म" का उभरता केंद्र स्थापित किया (खान, 2025)।

कैमल कंज़र्वेशन पैविलियन ने इस बार वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। इसमें ऊँट नस्ल संरक्षण, थार ईकोसिस्टम, वनस्पति-चारे के वैज्ञानिक पैटर्न, ऊँट डेयरी उत्पाद, ऊँट स्वास्थ्य, तथा प्राकृतिक चिकित्सा में ऊँट दूध की उपयोगिता से जुड़े शोध उपलब्ध कराए गए। इस पहल ने यह संकेत दिया कि उत्सव अब मात्र मनोरंजन या सांस्कृतिक प्रदर्शन का ही स्थल नहीं रहा, बल्कि यह पशु-विज्ञान, कृषि-पर्यावरणीय अध्ययन और सतत मरु-जीवन की चिंताओं को भी मंच प्रदान कर रहा है (भारद्वाज, 2023)।

मेले का **हेरिटेज क्राफ्ट बाज़ार** भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जिसमें उस्ता कला, नक्काशी, ऊँट ऊन बुनाई, लेदर क्राफ्ट, जूट कला और बंजारों की पारंपरिक हस्तकला को नए व्यापारिक अवसर प्राप्त हुए। 2025 में इस बाज़ार में 300 से अधिक कारीगरों, 150 महिला SHGs और अनेक MSMEs ने भागीदारी की (तिवारी, 2024)। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को न केवल विविधता मिली, बल्कि बीकानेर के "फेस्टिवल-आधारित सूक्ष्म व्यापार मॉडल" को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत होने का अवसर भी मिला। SHGs द्वारा ऊँट दूध उत्पाद—चॉकलेट, साबुन, लोशन, जैल—और ऊँट ऊन वस्त्रों की बिक्री में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई, जिसने ग्रामीण महिला उद्यमशीलता को महत्वपूर्ण समर्थन दिया। ऊँट-आधारित अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 2025 का मेला निर्णायक माना जा रहा है। पशुपालकों के लिए स्वास्थ्य शिविर, ऊँट मंडियाँ, प्रशिक्षण केंद्र, नस्ल-चयन कार्यक्रम और सहकारी समितियों का सुदृढ़ीकरण इस बात का संकेत है कि ऊँट अब केवल सांस्कृतिक प्रतीक नहीं, बल्कि आर्थिक संसाधन के रूप में पुनर्स्थापित हो रहा है (जाखड़, 2023)। इस प्रकार, 2025 का ऊँट मेला सांस्कृतिक पुनर्परिभाषा, आर्थिक नवाचार और वैश्विक सांस्कृतिक कूटनीति—इन तीनों आयामों को जोड़कर एक व्यापक विकास मॉडल प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, ऊँट मेला 2025 बीकानेर की परंपरा, नवाचार, संरक्षण और वैश्विक दृश्यता के अनूठे संगम का उदाहरण है। यह न केवल राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करता है बल्कि स्थानीय समुदायों, कारीगरों, पशुपालकों और पर्यटन-आधारित उद्यमों के लिए नए अवसर भी उत्पन्न करता है, जिससे बीकानेर की क्षेत्रीय पहचान एक वैश्विक मरु-संस्कृति केंद्र के रूप में अधिक सुदृढ़ होती जा रही है।

1.4 उत्सवों का सांस्कृतिक पुनर्निर्माण: परंपरा से नवाचार तक

भारतीय उत्सवों का सांस्कृतिक परिदृश्य वर्तमान समय में तीव्र परिवर्तन से गुजर रहा है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच नई सांस्कृतिक संरचनाएँ लगातार उभर रही हैं। राजस्थान जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों में यह परिवर्तन

विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है, क्योंकि यहाँ लोकजीवन, लोककला और उत्सव सदियों से सामुदायिक पहचान का अभिन्न आधार रहे हैं। समकालीन शोध यह दर्शाता है कि उत्सव अब केवल धार्मिक-व्रतीय अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रह गए, बल्कि वे सामाजिक प्रदर्शन, सांस्कृतिक ब्रांडिंग और स्थानीय अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के महत्वपूर्ण मंच बन चुके हैं (शर्मा, 2021)। इस प्रकार, पारंपरिक उत्सवों का रूपांतरण एक व्यापक सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करता है।

डिजिटल तकनीक इस परिवर्तन में केंद्रस्थ भूमिका निभा रही है। हाल के अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि सोशल मीडिया, लाइव-स्ट्रीमिंग, डिजिटल मार्केटिंग और वर्चुअल अनुभवों ने उत्सवों की पहुँच और प्रभाव को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है (मेघवाल, 2022)। जहाँ पहले उत्सवों के अनुभव का दायरा स्थानीय समुदाय तक सीमित हुआ करता था, वहीं अब वही आयोजन वैश्विक दर्शक-समुदाय तक पहुँच रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध 3D मैपिंग, प्रकाश-दीप्ति शो, वर्चुअल टूर तथा मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ न केवल दर्शनीय आकर्षण को बढ़ाती हैं बल्कि युवा पीढ़ी को भी पारंपरिक संस्कृति से जोड़ने का नया सेतु बनाती हैं (जैन, 2020)। इस बदलते परिवेश में परंपरागत मूल्यों की पुनर्व्याख्या भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। विद्वानों का मानना है कि समुदाय अब अपनी सांस्कृतिक विरासत को स्थिर या जड़-परंपरा के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे एक गतिशील, जीवंत और समय-सापेक्ष संरचना के रूप में समझता है (देसाई, 2019)। इसीलिए आज के उत्सवों में प्राचीन प्रतीकों और रीति-रिवाजों को नवीन संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया जा रहा है ताकि सांस्कृतिक निरंतरता बनाये रखते हुए उन्हें समकालीन समाज की संवेदनशीलताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जा सके। परिणामस्वरूप, उत्सव वह स्थल बन जाते हैं जहाँ अतीत की स्मृतियाँ तथा वर्तमान की आकांक्षाएँ एक साथ सह-अस्तित्व में रहती हैं—एक ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया का निर्माण करते हुए जो परंपरा को पुनर्जीवित भी करती है और उसे भविष्य के लिए प्रासंगिक भी बनाती है।

1.5 राजस्थान पर्यटन नीति 2025 और बीकानेर के उत्सव: नीति–व्यवहार विश्लेषण

राजस्थान पर्यटन नीति 2025 राज्य के पर्यटन परिदृश्य को अधिक सतत, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, डेजर्ट-टूरिज़्म, तथा हेरिटेज-आधारित अनुभवों को एकीकृत रूप से विकसित करना है, जिससे न केवल पर्यटकों की संख्या और अनुभव की गुणवत्ता में वृद्धि हो, बल्कि स्थानीय समुदायों को भी प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ मिल सके (राजस्थान पर्यटन विभाग, 2024)। नीति में "कल्चरल सर्किट्स", "डेज़र्ट टूरिज़्म क्लस्टर्स", "रूरल एक्सपीरियंस जोन", तथा "स्थानीय कला–कौशल-आधारित उद्यमों" को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया गया है। शोध से यह स्पष्ट है कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था में सांस्कृतिक पर्यटन का योगदान निरंतर बढ़ रहा है, और इसी कारण नीति 2025 इस क्षेत्र को राज्य की विकास रणनीति में एक केंद्रीय स्थान देती है (सिंह, 2023)।

बीकानेर के उत्सव—विशेषतः अंतर्राष्ट्रीय ऊँट मेला और कपिल मुनि मेला, कोलायत—इस नीति के व्यवहारिक प्रयोग के प्रभावशाली उदाहरण बनकर उभरते हैं। ऊँट मेला 2025 में प्रस्तुत गतिविधियाँ, जैसे कैमल स्किल शो, डेज़र्ट स्पोर्ट्स, हेरिटेज क्राफ्ट बाज़ार, कैमल कंज़र्वेशन पवेलियन, आदि सीधे-सीधे नीति के 'डेज़र्ट टूरिज़्म' और 'लिविंग हेरिटेज एक्सपीरियंस' मॉडल को साकार करती हैं (मेघवाल, 2025)। इसी प्रकार कपिल मुनि मेला, जो धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक स्मृति और ग्रामीण-शहरी सहभागिता की अनूठी संरचना प्रस्तुत करता है, नीति के 'रूरल टूरिज़्म' तथा 'स्पिरिचुअल सर्किट' के उद्देश्यों को प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण करता है (शर्मा, 2024)। इन दोनों मेलों में बढ़ती पर्यटन गतिविधियाँ यह दर्शाती हैं कि बीकानेर जिला, नीति 2025 में उल्लिखित सांस्कृतिक-आर्थिक रूपांतरण का एक मजबूत प्रयोग–स्थल बन रहा है। हालाँकि, नीति-प्रयोग में अनेक चुनौतियाँ भी उभरती हैं, जो पर्यटन विकास की जटिलताओं को उजागर करती हैं। विद्वानों का मत है कि पर्यटक आधार के विस्तार के साथ-साथ स्थानीय संसाधनों—

जल, स्वच्छता, परिवहन, तथा पारिस्थितिकी—पर दबाव बढ़ता है, विशेषकर ऐसे क्षेत्रों में जो पहले से ही शुष्क मरु-परिस्थितियों का सामना कर रहे हों (देसाई, 2023)। बीकानेर के दोनों प्रमुख मेलों में भी यही समस्या कई रूपों में देखी गई है; बड़ी संख्या में आगंतुकों के कारण इंफ्रास्ट्रक्चर पर दबाव, भीड़-प्रबंधन की चुनौतियाँ, और सांस्कृतिक प्रामाणिकता के बाज़ारीकरण की प्रवृत्ति विशेषज्ञों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है (जैन, 2024)। साथ ही, ऊँट-आधारित पारंपरिक पेशों में गिरावट तथा स्थानीय कलाकारों/कारीगरों की आय में अस्थिरता भी नीति-कार्यान्वयन की सीमाओं को दिखाती है।

इसके बावजूद, नीति 2025 बीकानेर के उत्सवों के लिए नए अवसर भी खोलती है। स्थानीय SHGs, MSMEs और ऊँट-आधारित उद्यमों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन, डिजिटल प्रमोशन, और क्राफ्ट–टूरिज़्म मॉडल को लेकर की जा रही पहलें सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक होती जा रही हैं (राजस्थान पर्यटन नीति, 2025)। बीकानेर ऊँट मेला जैसे आयोजनों में बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी दर्शाती है कि यदि इन अवसरों का रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाए, तो यह क्षेत्र सांस्कृतिक पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर और भी अधिक प्रभावशाली रूप से उभर सकता है। इस प्रकार, नीति 2025 और बीकानेर के उत्सवों का संबंध एक गतिशील नीति–व्यवहार संवाद प्रस्तुत करता है, जो राजस्थान के सांस्कृतिक भविष्य को रूपांतरित करने की अपार संभावनाएँ रखता है।

1.6 सांस्कृतिक प्रदर्शन, लोककला और बाज़ारीकरण

बीकानेर के उत्सव—विशेषकर ऊँट मेला और कपिल मुनि मेला—लोकसंगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक वाद्य, और हस्तशिल्प जैसी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए व्यापक मंच प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक रूप से ये प्रस्तुतियाँ सामुदायिक जीवन, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक मेलजोल का अभिन्न हिस्सा रही हैं (शर्मा, 2018)। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में पर्यटन के बढ़ते दबाव और वैश्विक दर्शकों की उपस्थिति ने इन सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। लोककला और पारंपरिक प्रदर्शन अब केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति नहीं रह गए; वे आर्थिक रूप से भी महत्वपूर्ण हो गए हैं, और आयोजकों द्वारा उन्हें दर्शकों के आकर्षण और व्यावसायिक लाभ के हिसाब से संरचित किया जाने लगा है (देसाई, 2020)। पर्यटन अर्थव्यवस्था के इस प्रभाव से उत्पन्न बाज़ारीकरण ने सांस्कृतिक अस्मिता और प्रामाणिकता के बीच जटिल प्रश्न खड़े कर दिए हैं। उदाहरण के लिए, ऊँट मेला में लोकनृत्यों और लोकसंगीत को नए मंचों, रंगारंग पोशाकों और स्टेज-सज्जा के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उनकी पारंपरिक जड़ें कभी-कभी कम दिखाई देती हैं (गुप्ता, 2021)। इसी प्रकार, हस्तशिल्प और कारीगरी—जैसे ऊँट ऊन के वस्त्र, उस्ता कला, और खुरजा शैली की नक्काशी—को पर्यटन दृष्टि से तैयार और मूल्यांकित किया जाता है, जिससे यह खतरा उत्पन्न होता है कि सांस्कृतिक मूल्यों और तकनीकी प्रामाणिकता के बीच संतुलन बिगड़ सकता है।

विरासत संरक्षण और कारीगरों की आजीविका के बीच संतुलन स्थापित करना इस परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि यदि पर्यटन आधारित बाज़ारीकरण को नियोजित और संवेदनशील तरीके से प्रबंधित किया जाए, तो यह न केवल कारीगरों की आय बढ़ा सकता है, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को भी जीवित रख सकता है (जैन, 2019)। उदाहरण के लिए, SHGs और MSMEs के माध्यम से कारीगरों को सीधे मेले में अपने उत्पाद बेचने का अवसर प्रदान करना, पारंपरिक तकनीकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना, और सांस्कृतिक प्रदर्शनों में व्याख्यात्मक सामग्री जोड़ना—ये सभी उपाय सांस्कृतिक प्रामाणिकता और आर्थिक सुदृढ़ता के बीच संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं (सिंह, 2022)। इस प्रकार, बीकानेर के उत्सव केवल मनोरंजन या धार्मिक आयोजन नहीं हैं; वे सांस्कृतिक प्रदर्शनों, पारंपरिक कला और आधुनिक बाज़ारीकरण के जटिल सह-अस्तित्व का उदाहरण हैं। इन आयोजनों में स्थानीय समुदाय, कारीगर और प्रशासन मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा

होती रहे, कारीगरों की आजीविका सुनिश्चित हो, और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण भी सतत रूप से हो सके। यही चुनौती और अवसर दोनों, बीकानेर के उत्सवों को अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाते हैं।

1.7 फेस्टिवल-टूरिज़्म और क्षेत्रीय ब्रांडिंग: बीकानेर की नई पहचान

बीकानेर ने पिछले दो दशकों में अपने पारंपरिक उत्सवों—विशेषकर ऊँट मेला और कपिल मुनि मेला—के माध्यम से क्षेत्रीय ब्रांडिंग के नए आयाम स्थापित किए हैं। ये उत्सव अब केवल स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियाँ नहीं रह गए हैं, बल्कि बीकानेर की "**कैमल कल्चर कैपिटल**" और "डेज़र्ट हेरिटेज हब" जैसी पहचान को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का प्रभावशाली माध्यम बन गए हैं (राजस्थान पर्यटन बोर्ड, 2025)। शोध से यह स्पष्ट होता है कि फेस्टिवल-टूरिज़्म स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने, रोजगार के अवसर उत्पन्न करने और अंतरराष्ट्रीय दृश्यता बढ़ाने में निर्णायक भूमिका निभाता है। इन आयोजनों के दौरान आने वाले पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि, स्थानीय व्यापार, कारीगर, होटल, रेस्टोरेंट और परिवहन क्षेत्रों के लिए आय के नए स्रोत प्रदान करती है (सिंह, 2022)।

फेस्टिवल-टूरिज़्म बीकानेर की सांस्कृतिक पहचान और पर्यटन अनुभव को एकीकृत करता है। ऊँट मेला में आयोजित कैमल स्किल शोज़, डेज़र्ट स्पोर्ट्स, हेरिटेज क्राफ्ट बाज़ार और कपिल मुनि मेले में धार्मिक अनुष्ठान, लोककला प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ न केवल स्थानीय संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं, बल्कि उन्हें व्यवस्थित रूप से पर्यटन उत्पाद में बदलकर वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया जाता है (गुप्ता, 2023)। इस प्रक्रिया में डिजिटल प्रचार—सोशल मीडिया, लाइव-स्ट्रीमिंग, वीडियो डॉक्यूमेंटेशन और ऑनलाइन टिकटिंग—ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे बीकानेर का सांस्कृतिक और पर्यटन ब्रांड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रहा है (जैन, 2021)। इसके साथ ही, हेरिटेज रूट्स और डेस्टिनेशन ब्रांडिंग की रणनीतियाँ बीकानेर के सांस्कृतिक पर्यटन अनुभव को और अधिक व्यवस्थित और आकर्षक बनाती हैं। पर्यटक न केवल मेलों तक सीमित रहते हैं, बल्कि बीकानेर के किले, महल, ऊँट-चालन मार्ग, लोककला केंद्र और स्थानीय कारीगरों के गांवों तक का समग्र अनुभव प्राप्त करते हैं। इस तरह, फेस्टिवल-टूरिज़्म स्थानीय संस्कृति, ग्रामीण उद्यम, और पर्यटन अर्थव्यवस्था को एक साथ जोड़ने का प्रभावी माध्यम बनता है (देसाई, 2022)।

वास्तव में, बीकानेर का यह प्रयास केवल सांस्कृतिक संरक्षण तक सीमित नहीं है; यह क्षेत्रीय ब्रांडिंग और आर्थिक विकास का अभिनव मॉडल प्रस्तुत करता है। फेस्टिवल-टूरिज़्म के माध्यम से बीकानेर ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक स्तर पर दृश्य बनाने, स्थानीय कारीगरों और उद्यमियों की आजीविका सुनिश्चित करने, और एक सुदृढ़ पर्यटन अर्थव्यवस्था विकसित करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। इस तरह, बीकानेर की नई पहचान "सांस्कृतिक और पर्यटन-आधारित ब्रांड" के रूप में स्थापित होती है, जो न केवल स्थानीय समुदाय बल्कि राज्य की समग्र आर्थिक और सांस्कृतिक रणनीति के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है (शर्मा, 2024)।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, राजस्थान पर्यटन विभाग. (2024). *राजस्थान पर्यटन नीति 2025: सतत विकास और सांस्कृतिक पर्यटन का मार्गदर्शन*। जयपुर: राजस्थान पर्यटन विभाग।
2. भारद्वाज, आर. (2023). *ऊँट संरक्षण और मरु पर्यावरणीय अध्ययन: बीकानेर के परिप्रेक्ष्य में*. जयपुर: मरुशिल्प प्रकाशन।
3. देसाई, पी. (2019). *समकालीन उत्सव और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण*. मुंबई: लोकसंस्कृति प्रकाशन।
4. देसाई, पी. (2022). *Heritage Tourism और स्थानीय अर्थव्यवस्था: बीकानेर का अध्ययन*. दिल्ली: सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र।

5. दवे, एस. (2021). *बीकानेर के तीर्थ और सांस्कृतिक स्थल: इतिहास और आधुनिकता का मिश्रण.* जयपुर: थार साहित्य मंच।
6. गौड़, एम. (2018). *बीकानेर की ऊँट परंपराएँ और सांस्कृतिक जीवन.* बीकानेर: मरु अध्ययन संस्थान।
7. गुप्ता, आर. (2020). *कोलायत झील और तीर्थ स्थल परंपरा.* जयपुर: राजस्थान लोकधरोहर प्रकाशन।
8. गुप्ता, आर. (2023). *फेस्टिवल-टूरिज़्म और ब्रांडिंग: बीकानेर के उत्सवों का विश्लेषण.* दिल्ली: सांस्कृतिक और पर्यटन अध्ययन।
9. जाखड़, वी. (2023). *ऊँट आधारित अर्थव्यवस्था और ग्रामीण उद्यम: बीकानेर केस स्टडी.* जयपुर: मरु उद्यमिता प्रकाशन।
10. जैन, ए. (2019). *सांस्कृतिक प्रदर्शन और पर्यटन: प्रामाणिकता बनाम बाज़ारीकरण.* मुंबई: लोककला एवं संस्कृति शोध केंद्र।
11. जैन, ए. (2021). *डिजिटल प्रचार और फेस्टिवल टूरिज़्म: बीकानेर का उदाहरण.* दिल्ली: डिजिटल सांस्कृतिक अध्ययन।
12. खान, आर. (2025). *डेज़र्ट स्पोर्ट्स और आधुनिक पर्यटन: बीकानेर ऊँट मेला 2025 का विश्लेषण.* जयपुर: राजस्थान खेल और पर्यटन संस्थान।
13. मेघवाल, डी. (2022). *डिजिटल तकनीक और सांस्कृतिक उत्सव: राजस्थान में प्रवृत्तियाँ.* बीकानेर: लोकधरोहर प्रकाशन।
14. शर्मा, आर. (2016). *कोलायत का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व.* जयपुर: थार सांस्कृतिक अध्ययन।
15. शर्मा, आर. (2021). *उत्सव और लोकजीवन: सांस्कृतिक परिवर्तन और नवाचार.* जयपुर: सांस्कृतिक विज्ञान प्रकाशन।
16. शर्मा, आर. (2024). *बीकानेर की सांस्कृतिक पहचान और क्षेत्रीय ब्रांडिंग.* जयपुर: राजस्थान सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र।
17. सिंह, ए. (2020). *बीकानेर के मेलों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामुदायिक विकास.* बीकानेर: थार समाज अध्ययन।
18. सिंह, ए. (2022). *स्थानीय कारीगर और फेस्टिवल टूरिज़्म: आर्थिक और सांस्कृतिक संतुलन.* दिल्ली: सांस्कृतिक और पर्यटन अध्ययन।
19. तिवारी, पी. (2024). *महिला SHGs और फेस्टिवल आधारित उद्यम: बीकानेर का केस स्टडी.* जयपुर: ग्रामीण उद्यमिता प्रकाशन।
20. जोशी, ए. (2019). *कपिल मुनि तीर्थ और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू.* बीकानेर: लोकधरोहर शोध संस्थान।